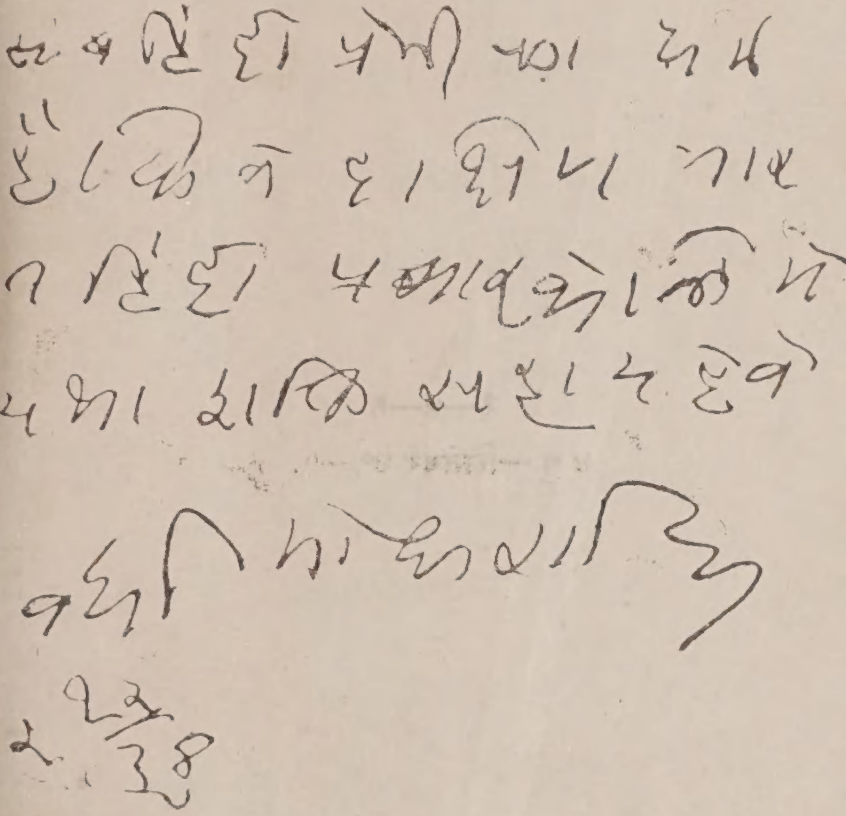
लिखावट
के
नमूने

लिखावट के नमूने

[देश के मान्य नेताओं और विद्वानों के विचार उन्हीं के अक्षरों में]



प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

त्यागरायनगर, मद्रास

 १९४९ [मूल्य १२ आने

हिन्दुस्तानी प्रचार पुस्तकमाला पुष्प—५२.

१—४—६
४ पु.—सितंबर ४९—५.

हिन्दुस्तानी प्रचार प्रेस, त्यागरायनगर, मद्रास.

अपनी तरफ़ से —

व्यावहारिक जीवन में मुद्रित लिपि की अपेक्षा हाथ की लिखावट पढ़ने का अभ्यास अधिक आवश्यक है। हिन्दी जितनी हमारी व्यावहारिक भाषा बने उतनी ही उसकी उपयोगिता होगी। इस किताब में लिखावट के सतरह के नमूने दिये हैं। हिन्दी विद्यार्थियों को हाथ की लिखावट के नमूनों से परिचित कराना ही इसका उद्देश्य है।

हम आशा रखते हैं कि यह पुस्तक

की योजना हिन्दी को सार्वदेशिक
बनाने में खासि का मदद पहुँचानेवाली
भाग्यवश हमें देश के
सम्मान्य नेताओं के उद्देश्य भी उन्हीं
के हाथ की लिखावट में मिले हैं।
इसे हम भी अपने पाठकों के
साथ अपना अहोभाग्य मानते हैं।

द. भा.
हिन्दी प्रचार सभा
त्यागरायनगर
मद्रास

सत्यनारायण
प्रधानमंत्री
13.5.50

कांग्रेस का वैदेशिक विभाग

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इंग्लिस्तान का बड़ा हाथ है। अंग्रेजी सरकार का मुख्य उद्देश्य है साम्राज्य को कायम रखना और पूंजीशाही को बनाये रखना। इसकी क्षमता नहीं कि यह संसार को शान्ति और उन्नति के रास्ते पर ले आये।

अंग्रेजी सरकार की शक्ति का एक बहुत बड़ा पाया हिन्दुस्तानी साम्राज्य है। हिन्दुस्तान की जनसंख्या और धन के सहारे अंग्रेजी सरकार अपनी वैदेशिक नीति को सफल बनाती है। हमें चाहिये कि हम हिन्दुस्तान को ऐसी वैदेशिक नीति के फन्दे से छुड़ायें। हम यह तभी कर सकते हैं जब हम भारतीय महासभा के ज़रिये हिन्दुस्तान और दूसरे राष्ट्रों के आपसी सम्बन्ध की एक नई नींव डालें। कांग्रेस के वैदेशिक विभाग का यही उद्देश्य है।

इलाहाबाद
४ मार्च १९३७

राममनोहर लोहिया

हमारा रास्ता

भारत की राष्ट्रीय प्रगति का केवल एक ही सीधा रास्ता है। अहिंसा और सत्य का रास्ता। केवल इस रास्ते पर चल कर ही हम अपने मुल्क को आज़ाद कर सकते हैं, संवर्ष मानव समाज के दुःखों को थोड़ा बहुत कम कर सकते हैं; और भावी मानव उन्नति में बजाय बाधा होने के सहायक बन सकते हैं।

वर्तमान यूरोप को जिस दलदल के अन्दर फंस कर अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ रहा है, उसका सब से बड़ा कारण यह है कि उसने उन धार्मिक और नैतिक सिद्धान्तों की अवहेलना की जो हज़ारों साल के तजरुबे से मानव समाज को सुखी और सुसंहत

रखने के लिए आवश्यक साबित हो चुके हैं, और अपने जीवन को कोरी राजनीति और अर्थशास्त्र के असूलों पर क़ायम करना चाहा। रूस के उस सुन्दर प्रयोग में भी, जो अन्य कई दृष्टियों से प्रशंसनीय है, यही मौलिक भ्रान्ति मौजूद है। वास्तव में जबकि हमारी सन् ३० की अधिक सफलता का कारण हमारे आन्दोलन की सापेक्ष पवित्रता थी, सन् ३२ की सापेक्ष असफलता का कारण वह छल बल थे जिनका हमने अधीर होकर उस वर्ष आश्रय लेना शुरू कर दिया था। हम में केवल श्रद्धा की कमी है।

किन्तु, मार्ग निर्धारित है। हिर

२

फिर कर हमें साहस और विश्वास के साथ उसी ओर आना होगा। हिन्दोस्तान की आज़ादी और उसके भावी गौरव की कुंजी, न मौस्को में है, न बर्लिन में, न रोम में है, न लन्दन में, न दिल्ली के ऐसम्बली चैम्बर्स में, वह कुंजी भारत ही के भूतकाल में है, कबीर में है, सेगांव में है।

सुन्दरलाल

इलाहाबाद
२-३-३७

चाहे फ़ारसी उर्दू में
लिखें चाहे हिन्दी में हमारे देश
की ज़बान हिन्दुस्तानी है।
इस के लिये हिन्दू मुसलमान
दोनों ने काम किया है।
सब को मिलकर इसकी
सेवा करना चाहिये। एक
ज़बान न होगी तो एक
क़ौम कैसे बनेगी।

—ज़ाकिर हुसैन
१५-२-३८

हर देश के साहित्य का संबंध उस देश की राजनैतिक और आर्थिक हालत से होता है। जो देश स्वतंत्र न हो, जिस देश की जनता दरिद्रता में फंसी हो, उसके विचार दबे रहते हैं, कलम रुक रुक कर चलता है। देश की हालत देख कर हम बता सकते हैं कि उसका साहित्य कैसा होगा। खाली साहित्य को पढ़कर हम बता सकते हैं कि देश की राजनैतिक और आर्थिक हालत क्या है, सभ्यता उसकी कैसी है। साहित्य तो एक आईना है जिसमें देश की शकल दिखे और उसके दुख और सुख का हाल मालूम हो; उसके विचारों और इच्छाओं और आरज़ुओं और वलवलों

की झलक नज़र आए; उसकी शक्ति मालूम हो और उसकी कमज़ोरी; उसकी बहादुरी और डरपोकपन दिखे। गिरे हुए देश का साहित्य गिरा हुआ होगा। बंधे हुए देश का साहित्य बंधा हुआ होता है। इस लिये जो लोग साहित्य से प्रेम करते हैं और उसकी उन्नति चाहते हैं, उनको चाहिये कि देश को आज़ाद करें और हमारी जनता की दरिद्रता दूर करें।

जवाहरलाल नेहरू

वर्धा
२ मार्च १९३९ - फाल्गुन बदि ४, १९९६

ब्राह्मण-धर्म ४

प्राचीन काल से भारतवर्ष में वैदिक धर्म प्रचलित था। ईश्वर की उपासना, यज्ञ करना तथा वर्णव्यवस्था आदि इसके मुख्य अंग थे। यज्ञ में पशु-हिंसा भी होती थी। ईश्वर की उपासना उसके भिन्न भिन्न नामों के अनुसार भिन्न भिन्न रूप में होती थी। प्रायः सारे भारतवर्ष में वैदिक धर्म का प्रचार था। बौद्ध धर्म की उन्नति के समय में उसे राज्य की सहायता मिलने के कारण ब्राह्मण

धर्म का प्रचार शनैः शनैः कम होता गया, और जैन धर्म ने भी इसे कुछ हानि पहुँचाई। बौद्ध और जैन धर्मों की उन्नति के समय में वैदिक धर्म क्षीण तो हुआ, परंतु नष्ट नहीं हुआ। ज्योंही बौद्ध धर्म का प्रभाव कम होने लगा, त्योंही वैदिक धर्म ने बहुत वेग से उन्नति आरंभ की और वह बहुत विकसित तथा पल्लवित होने लगा।

अजमेर, चैत्र कृष्णा वि. सं. १९८६ } गौरीशंकर हीराचंद ओझा

भारतवर्ष की सांस्कृतिक और साहित्यिक एकता ब्रिटिश राज का परिणाम नहीं है। वह तो रामायण और महाभारत के काल से ही एक और अखंड धारा होकर बहती आ रही है। भाषा-भेद ने भारत की एकता में कभी रुकावट नहीं डाली।

कन्हैयालाल मुनशी

मद्रास के हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में बहुत पढ़ा और सुना था। परन्तु उससे मन में जो एक धारणा बद्धमूल हुई थी, सम्मेलन के अधिवेशन में आकर मैंने देखा कि वह सीमित है। यहाँ तो हिन्दी प्रचार का कार्य कल्पनातीत है।

मद्रास के हिन्दी प्रचारकों ने राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य में अपने को सब से अधिक गौरवान्वित किया है। मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।

त्यागरायनगर
मद्रास, २,४,१९३८. — सुन्दरलाल त्रिपाठी

समाज जीवनकी वर्तमान समस्या एक बड़े भारी समाज परिवर्तन का नतीजा है। इस समस्याके पीछे आन्तराष्ट्रीय अशान्तीके काले बादल हैं। मगर यह भी याद रहे कि इन कठिनाइयोंसे कोई राष्ट्र या व्यक्ती अपनेको बचा नहीं सकता न तो कोई किसी जादूसे ये हल हो सकती हैं।

एक व्यापक दृष्टीकोण, सदैव परि-वर्तनशील परिस्थितीको समझनेकी ताकद, और उसके साथ साथ अपने ऊँचे और अचल आदर्शके अनुसार सर्व-भूत-हितके ध्येयवाद पर परिश्रम, यह समाजवादीका एकमात्र रास्ता है।

[illegible]

विठ्ठलनगर,
२ फरवरी ३८

देश के काम होते हैं उस भाषा
आवश्यक है। हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी
भाषा का प्रचार इसी उद्देश्य से करती
है। इसका उद्देश्य यह कदापि नहीं
है कि प्रान्तीय भाषाओं को किसी
प्रकार से हानि पहुँचावे। राष्ट्रीय
और अन्तर्प्रान्तीय काम में इस राष्ट्र
भाषा को ही काम में लाना चाहिये,
लेकिन भारत में जो राष्ट्रभाषा की।
इसी प्रकार और अच्छा सेवा करती
है उस से आशा होती है कि यह
उद्देश्य भी पूरी सिद्ध होगा।

१०-३-३६ राजेन्द्रप्रसाद

सजीव साहित्य

सत्य का तकाज़ा है कि हम जैसे हैं वैसा ही लोगों को देखने दें। लोग हमारी उतनी ही कीमत आँकें जितनी कि वास्तव में हमारी है। हमारे साहित्य में भी यही सत्य प्रति-बिम्बित होना चाहिए।

लोग हमारे प्रत्यक्ष जीवन से जितना पायेंगे उससे कम नहीं उन्हें हमारी वाणी और लेखनी से मिलेगा। हमारी वाणी और लेखनी में जो कुछ बल है वह हमें सत्य की साधना से ही मिलता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा साहित्य सजीव और तेजस्वी हो तो हमें एक-मात्र सत्य की ही उपासना करनी होगी। जो सत्य हो उसे आदरपूर्वक अपनाना होगा, और जो असत्य हो उसे दृढ़तापूर्वक छोड़ना, हटाना और मिटाना होगा।

गाँधी आश्रम,
हटूंडी (अजमेर)

हरिभाऊ उपाध्याय
६।३।३९

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहिं राम॥

महावीर-प्र० द्विवेदी

कई लोगों का कथन है कि हिन्दी
भाषा में राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता
नहीं है किन्तु यह उनका कथन भ्रम-
मूलक है। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती
है इस विषय में स्व० लोकमान्य तिलक
महात्मा गान्धी आदि महापुरुषों ने
भली भांति सिद्ध कर दिया है - हिन्दी
साहित्य संमेलन ने इस विषय में
अब तक जो प्रयत्न किये हैं और इस
~~विषय में~~ कार्य में जो सफलता प्राप्त
की है इससे तो पूर्ण आशा है कि
हिन्दी अवश्य राष्ट्रभाषा बनेगी
ता. ७.५—१८.३ नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

भारत की स्वतंत्रता के प्रश्न के पश्चात् यदि कोई प्रश्न हमारे लिए महत्व का है तो वह है उपनिवेशों का प्रश्न। भारत की मनुष्य-संख्या दिनों दिन बढ़ रही है। अगली जन-संख्या में संभव है हम चालीस करोड़ हो जावें। आठ करोड़ अंग्रेजों को न जाने कितने उपनिवेश चाहिए पर हमें इसकी चिन्ता बहुत कम है। यद्यपि आफ्रिका हमारे बहुत निकट है। वहाँ की जल-वायु हमारे अनुकूल है। हमारा उस देश से बड़ा पुराना संबन्ध है। इतने पर भी हम वहाँ अब तक एक लाख से अधिक न हो सके। दक्षिण आफ्रिका में योरोपियन तथा सं-

मार बसाते हुए भी करीब बीस लाख
के पहुंच गये हैं। उनके देखा यहाँ
और पूंजी पतियों ने वहाँ के लिए
औपनिवेशिक योजनाएँ बनायीं
और इतनी बड़ी संख्या में और-
पनिवेशों को इतने थोड़े समय में
बसा दिया। हमारे लिए भी यह
बात नितान्त आवश्यक है कि
हम इसी प्रकार की योजनाओं में
के द्वारा पूर्वीय आफ्रिका को
अपना प्रधान उपनिवेश
बनावें। पूर्वीय आफ्रिका ही
भारत का प्रधान उपनिवेश
हो सकता है।

— गोविन्ददास
१८-२-३८

अमर दो !

एक बात, जो मुझे एक संताली ने कही थी, पाठकों को सुनाता हूँ। उसने कहा था —

"हमें एक ही दुःख है, वह दूर कर दिया जाय। जब अकाल पड़ता है तब खेत में नाज मर जाता है, कुएँ में पानी मर जाता है, घर में मनुष्य और मवेशी मर जाते हैं; पर दो नहीं मरते — अजीना (सरकारी कर) और सूद। बस यही हमारा दुःख है और कुछ नहीं!"

वर्धा, ४-३-१९३७ } किशोरलाल ध. मशरूवाला

हरिपुरा

चाहे हिन्दी कहो चाहे
हिन्दी हिन्दुस्तानी कहो
जिस भाषाको भारतवर्षके
बहुतांश लोक समझ सकते
हैं बोल सकते हैं वह ही
हिन्दुस्थानकी राष्ट्रभाषा होने
के लिये पात्र है.

बाळ गंगाधर टिळक

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

(१) मेहमान के मेहमान मत बनो। किसी के यहां जबरदस्ती मेहमान मत बनो, "मान न मान, मैं तेरा मेहमान" यह ठीक नहीं। जिसके मेहमान बनो उसके यहां भीड़ न ले जाओ और न ज्यादः दिनों तक ठहरो। कोई मित्र मार्ग में मिल जाए तो उसके मेहमान मत बनो।

(२) मंगनी की चीज मंगनी

मत दो। उस के लौटाने में
ढिलाई मत करो। जिस काम के
लिए चीज़ मंगनी मांगो उस काम
के हो जाने पर उस को तुरन्त
लौटा दो। जिस जगह से
चीज़ मंगनी लाओ उसी जगह
पे लौटाओ। खराब हो जाए, टूट
जाए या खो जाए तो तुरन्त बिना
कहे नई चीज़ ला दो। पेन्सिल
आदि छोटी चीज़ें भी मंगनी लेते,
देना ही करो। बहुत कीमती चीज़ें कभी
मंगनी न लो।।

(३) जिधर चलो, उधर देखो। पीछे देखना हो तो रुक जाओ॥

(४) किसी जगह से जाने लगो तो देख लो कि कोई चीज़ रह तो नहीं गई। उस जगह को साफ़ करके छोड़ना चाहिए॥

(५) किसी का नाम पूछना हो तो पूछो, "आपका शुभ नाम क्या है?"

आश्रम २-३-१९३२ {रामनारायण मिश्र

आज की आवश्यकता इस में है कि वह किन्हीं वस्तुओं के [illegible]
विशिष्ट वर्गों के मन को छूता नहीं है। किन्तु भारत जैसे
[illegible] की लाखों लाखों [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] का [illegible] [illegible] है तो [illegible] [illegible]
है। [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] हैं।

प्रसाद जी

इस स्वप्नमयी संसृति के
सच्चे जीवन तुम जागो।
मंगल किरणों से रंजित
मेरे सुन्दर तन जागो।

[illegible]

काव्य या साहित्य को हम महाजनों की भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं का एक संचित भंडार कह सकते हैं, जो अनंत काल से भरता आता है और निरंतर भरता जायगा। मानव सृष्टि के आरंभ से मनुष्य जो देखता, अनुभव करता और सोचता विचारता आया है, उस सब का बहुत कुछ अंश इसमें भरा पड़ा है।

काशी
६.३.'३७

श्यामसुंदरदास

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुर-बाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी की माला बिंध
प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि! डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ,
भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वन-माली, उस पथ में देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

— एक भारतीय आत्मा

आद. पं. द्वारकाप्रसादजी मिश्र को अभिवादन
हरिपुरा; १७ फरवरी १९३८

इस जग में जीवित हूँ मैं, कण कण के परिवर्तन से।
तुमने मुझको बाँधा है, इन साँसों के बन्धन से॥

श्री रामकुमार वर्मा

१२.१०.३६

शंका होने पर दूसरों से न पूछ कर स्वयं अपने से पूछिए। यह ज्ञान निर्णायक निकलेगा।

प्रयाग,
जनवरी २२, ३७।

धीरेन्द्र वर्मा।

धर्म ही लोकमत का अनुभूति आधार है।

राजेन्द्र प्रसाद
२८-१०-३७.

जीवित भाषा का एकमात्र
लक्षण यह है कि वह लचीली
होती है और समय की
आवश्यकताओं के अनुसार
सुविधायें उपस्थित करती
है। अन्य भाषा भाषियों को
हिन्दी सीखने में सब से
बड़ी कठिनाई लिंग के
कारण उपस्थित होती है। यदि
हम इस कठिनाई को दूर कर
सकें तो हिन्दी के और भारतीय
संस्कृति के प्रचार-विस्तार में
सहायक होंगे।

पुरुषोत्तमदास टंडन

मद्रास
२ ८ ३ ३८

प्रेम

प्रेम का सच्चा सुख त्याग में है। जहाँ स्वार्थ है, वहाँ प्रेम कहाँ? जात या कुल, उम्र देखने के बिना किसी स्वार्थ के हृदय में आनंद की लहरें उठने लगें, उसके मिलन के लिए आतुरता हो जाय, तब जानो प्रेम सच्चा है।

सच्चे प्रेम में सदा निर्मल नवीनता रहती है। चन्द्रमा को हम जितनी बार देखते हैं, वह नया

यह कभी-कभी होता है कि
ऐसे यह प्रेम भी निम्न स्तरों पर
उतर, शोषण और हिंसा का
वाहन हो।

प्रेम परमात्मा के निकट
लाने की सामर्थ्य है। मैं
तो कहूँ कि प्रेम परमात्मा
का प्रतिबिम्ब ही है। जो
प्रेम परमात्मा की ओर आपको
न ले जाए, वह प्रेम
नहीं, काम है, मोह है या
वासना है।

कुछ लोग कहते हैं,

प्रेम की व्याख्या कठिन है; पर
मुश्किल है। वह मोह है, जो
शरीर का शरीर से होता है,
प्रेम आत्मा का विषय है।

जिसके जीवन में जितना
ही आत्मिक प्रेम है, उतना ही
आत्मिक शक्ति से उसका जीवन
सफल है।

प्रेम का प्रकाश भीतर
और बाहर जगमगाता रहे। उसके
साथ प्रेम के मधुर सौरभ से
थोड़े ही समय में दुनिया भर
जाया करे।

रामनरेश त्रिपाठी

प्रयाग
८ ३ ३७

मेरी चाहना तो यह है कि भारत की
ऐसी भाषा हो जो हर एक भारत
निवासी — हिन्दू, मुसलिम, ईसाई
पारसी आसानी से समझ सके

कैलास नाथ काटजू

हरिपुरा

उदारता पवित्रता और
उद्योग के द्वारा ही हम
अपना उद्धार कर सकेंगे।
यही आज का युगधर्म है।

२७ ३/३८. काका कालेलकर

॥ प्रयाग-त्रिवेनी वर्णन ॥

(बरवै छंद)

सिर सेंदुर कछु केसरवा,
गाढ़ा कोर।
आँचलि रहति कलिन्दिया,
कोरवा ओट॥
झूलति रहति सुघनिया,
चपेल झूलि।
अरुझि चलत परसनवा,
छुवत न झूलि॥

— डा॰ केतुप्रसाद मिश्र
कैम्प हरिपुरा, १७-२-३८

દુઃખ સં[illegible] માનવને આપવી
વરદાન દો પ્રભુ [illegible];
[illegible]
[illegible] સંયોગ,
[illegible]
[illegible] વિયોગ,
[illegible] —
[illegible]

—બાપુના આશીર્વાદ
૨૫/૪/૩૬

दक्षिण — सभा
मैं ~~अखिल~~ भारत हिंदी ~~साहित्य~~
सम्मेलन को मुबारकबाद देता हूं
और खुदा से दुआ करता हूं कि वह
इसकी कोशिशों में मदद करे और
इस नेक काम में तरक्की दे ताकि
मुल्क में हिंदुस्तान की पूरी खिदमत
हो सके. मैं हूं आपका सेवक
नागपूर. अब्दुल गफ़्फ़ार
१६-३-३६

हम हिंदी प्रचारकों की कार्य-शक्ति अत्यंत सीमित है। इसी कारण से हम हिंदी के साहित्य की ओर कम तथा राष्ट्रभाषा प्रचार की तरफ अधिक ध्यान देते हैं। अपने भावों को अच्छे असरकारी शब्दों में प्रकट करने की शक्ति हर एक हिंदुस्थानवासी में आ जाय यही हमारा मन्तव्य है।

परतंत्रता के जाल को तोडने के कार्य में इससे हम पूरा सहयोग दे सकते हैं।

ग. र. वैशंपायन

सं. हिंदी-मराठी-व्यवहार कोश

आज हम उदासीन नहीं रह सकते। हमको
हर एकके सामने यह प्रश्न है कि वह
इन शक्तियोंमेंसे किसका साथ देगा।
हम एक क्रान्तिकारी युगमें रह रहे हैं,
आज देशमें नई २ तबदीलियां होती
हैं। हम इनकी उपेक्षा नहीं कर
सकते। इन नवीन समस्याओंके
संबन्धमें, अच्छी या बुरी, कुछ न कुछ
राय हमको कायम करनी होगी।
हमारे निर्णयपर संसारका भविष्य
निर्भर रहता है।

नरेन्द्रदेव

हर एक व्यक्ति को यह समझना चाहिये कि लोगों की भलाई के बिना उस की भलाई नहीं हो सकती. समाज की भलाई ही सच्ची आध्यात्मिकता है. व्यक्तिगत उन्नति में स्वार्थ की भावना नहीं होनी चाहिये समाज के अभ्युदय के बिना व्यक्तिगत उन्नति व्यर्थ है. हर एक समाज को भी इस सच्चाई को अनुभव करना चाहिये.

शंकर. दिवाकर. देव.

हिन्दी प्रचारमें तो मेरा
बड़ा विश्वास है जबतक
हिन्दुस्तानमें कोई ऐसी
भाषा न होवे जो अंग्रेजी
के बदले सारे देशमें बोली
जाय तब तक भारतवर्षमें
एकता कभी न होगी

लीलावती मुनशी

हिंदी प्रचार

एक भाषा यह एक-राष्ट्रीयता का एक प्रधान चिन्ह है ऐसा मैं मानता हूं. मद्रास प्रान्त की सब प्रान्तीय भाषायें संस्कृत जन्य नहीं हैं. अतएव वहां हिंदी प्रचार की ज्यादह जरूरत है. वहां हिंदीका प्रचार बहोत अच्छी तरह और जोर शोरके साथ हो रहा है, यह बड़ी खुशी की बात है।

हरद्वार १६.२.३६ ना. भा. खरे

[illegible]

आत्मा रहती है

प्रत्येक आत्मा का

अपना विकास का होता

है। यही इसकी विशेषता

होने वाला वह कोई मानी

है इसको और इसके

विकास में बहुत फर्क

है। इस बात पर ध्यान

लोगों के वह मानते आये नहीं

देखते तो उनकी भलाई

देना अंग्रेजों का है। वह लोग
है। हिंद आबादी के [illegible]
लोग गांवडे में रहनेवाले [illegible]
होते हैं। लोकमान्य तिलक
के महाराष्ट्र में [illegible]
प्रसिद्ध नाम [illegible]
[illegible]
आजादी में [illegible] है वह
रहेगा ही।

सेगांव वर्धा
ता० १२-३-३८

मो० क० गांधी

१ दया धर्म का मूल है.

२ जन्मभूमि जननीसमान पूज्य है।

3 त्याग, विवेक और साहस ये साधनत्रयी पारमार्थिक और सांसारिक मोक्षसंपादनकी सोपान परंपरा समझी है.

४ पारतंत्र्यसे और कोई लज्जास्पद स्थिति नहि तथा स्वातंत्र्यसे अधिक अभिमानास्पद कोई अवस्था भी नहि हो सकती.

माधव श्रीहरि अणे

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है।

[illegible]

२०-२-३८

[illegible]

संसार के सब मनुष्य स्वार्थान्ध हो रहे हैं। स्वदेशभक्त स्वदेश के स्वार्थ से — स्वसमाजभक्त स्वसमाज के स्वार्थ से — स्वधर्मभक्त स्वधर्म के स्वार्थ से — स्वकुटुम्बानुरक्त स्वकुटुम्ब के स्वार्थ से — स्वानुरक्त स्वकीय स्वार्थ से — अन्ध होकर अपने सङ्कुचित क्षेत्र से बाहर जाती हुई भी अपनी दृष्टि को बलपूर्वक रोकते हैं। यह स्वार्थधारा इस शताब्दी में ऐसे वेग से चलने लगी है कि 'महाप्रलय' नहीं तो 'खण्डप्रलय' तो अवश्य ही आता हुआ भासित होता है॥

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गङ्गानाथ झा

१७।७।३७

प्रयाग

बनारस

६-१०-३८

दोहा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अयोध्यासिंह उपाध्याय

हरिऔध

सर्व सुखसाधन का एकमात्र उपाय।

ॐ

आत्मज्ञान के बिना धर्म के तत्त्व का ज्ञान नहीं। धर्मतत्त्व ज्ञान के बिना समाज की उत्तम व्यवस्था नहीं। सच्ची वर्णव्यवस्था और सच्ची आश्रमव्यवस्था के बिना वैयक्तिक और सामूहिक सुख नहीं।

"नह्यनध्यात्मवित् कश्चित् क्रियाफलमुपाश्नुते"
(मनु).

बुद्धं, सद्बुद्धिमंतं, आत्मबोधवन्तं, शरणं गच्छामि। धर्मं, सद्बुद्धिनिर्णीतं, सर्वधारकं, सद्धर्मं, शरणं गच्छामि। संघं, सद्धर्मानुसारिणं, सुसंहतं, सुसंगठितं, सुसंघटितं, मानवसंघातं, सुव्यवस्थितं समाजं, शरणं गच्छामि।

नई दिल्ली, भगवान् दास.
शिवरात्रि,
सौर २७ फाल्गुन (कुंभ), १९८३ वि० = ११ मार्च १९२७ ई०

नई दिल्ली
४ अगस्त १९६३

प्रिय महादेवी जी – [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

कांग्रेस का वैदेशिक विभाग

ह. पृ. ३

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इंग्लिस्तान का बड़ा हाथ है। अंग्रेज़ी सरकार का मुख्य उद्देश्य है साम्राज्य को क़ायम रखना और पूंजीशाही को बनाये रखना। इसकी क्षमता नहीं कि यह संसार को शान्ति और उन्नति के रास्ते पर ले जाये।

अंग्रेज़ी सरकार की शक्ति का एक बहुत बड़ा पाया हिन्दुस्तानी साम्राज्य है। हिन्दुस्तान की जनसंख्या और धन के सहारे अंग्रेज़ी सरकार अपनी वैदेशिक नीति को सफल बनाती है। हमें चाहिए कि हम हिन्दुस्तान को ऐसी वैदेशिक नीति के फन्दे से छुड़ायें। हम यह तभी कर सकते हैं जब हम भारतीय महासभा के ज़रिये हिन्दुस्तान और दूसरे राष्ट्रों के आपसी संबंध की एक नई नींव डालें। कांग्रेस के वैदेशिक विभाग का यही उद्देश्य है।

इलाहाबाद
४ मार्च १९३७

राममनोहर लोहिया

हमारा रास्ता

ह. पृ. ४

भारत की राष्ट्रीय प्रगति का केवल एक ही सीधा रास्ता है। अहिंसा और सत्य का रास्ता। केवल इस रास्ते पर चलकर ही हम अपने मुल्क को आज़ाद कर सकते हैं, संतप्त मानव समाज के दुःखों को थोड़ा बहुत कम कर सकते हैं, और भावी मानव उन्नति में बजाय बाधा होने के सहायक बन सकते हैं।

वर्तमान यूरोप को जिस दलदल के अन्दर फँसकर अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ रहा है; उसका सब से बड़ा कारण यह है कि उसने उन धार्मिक और नैतिक सिद्धान्तों की अवहेलना की जो हज़ारों साल के तजरुबे मे मानव समाज को सुखी और सुसंहत रखने के लिए आवश्यक साबित हो चुके हैं, और अपने जीवन को कोरी राजनीति और अर्थशास्त्र के असूलों पर क़ायम करना चाहा। रूस के उस सुन्दर

प्रयोग में भी, जो अन्य कई दृष्टियों से प्रशंसनीय है, यही मौलिक भ्रान्ति मौजूद है। वास्तव में जब कि हमारी सन् ३० की अधिक सफलता का कारण हमारे आन्दोलन की सापेक्ष पवित्रता थी। सन् ३२ की सापेक्षा असफलता का कारण वह छल-बल थे जिनका हमने अधीर होकर उस वर्ष आश्रय लेना शुरू कर दिया था। हममें केवल श्रद्धा की कमी है।

किन्तु मार्ग निर्धारित है। हिर फिर कर हमें साहस और विश्वास के साथ उसी ओर आना होगा। हिन्दोस्तान की आज़ादी और उसके भावी गौरव की कुंजी, न मोस्को में है, न बर्लिन में, न रोम में है, न लन्दन में, न दिल्ली के ऐसम्बली चैम्बर्स में, वह कुंजी भारत ही के भूतकाल में है, कबीर में है, सेगांव में है।

इलाहाबाद
३-३-३७

सुन्दरलाल

ह. पृ. ७

चाहे आदमी उर्दू में लिखे चाहे हिन्दी में हमारे देश की ज़बान हिन्दुस्तानी है। इस के लिये हिन्दू मुसलमान दोनों ने काम किया है। सबको मिलकर इसकी सेवा करना चाहिये। एक ज़बान न होगी तो एक क़ौम कैसे बनेगी।

ज़ाकिर हुसैन

(जामिया मिलिया, दिल्ली)

१५-२-३८

ह. पृ. ८

हर देश के साहित्य का संबंध उस देश की राजनैतिक और आर्थिक हालत से होता है। जो देश स्वतंत्र न हो, जिस देश की जनता दरिद्रता में फँसी हो, उसके विचार दबे रहते हैं, क़लम रुक रुक कर चलता है। देश की हालत देखकर हम बता सक्ते हैं कि उसका साहित्य कैसा होगा। खाली साहित्य को पढ़कर

हम बता सक्ते हैं कि देश की राजनैतिक और आर्थिक हालत क्या है, सभ्यता उसकी कैसी है। साहित्य तो एक आईना है जिसमें देश की जनता दिखे और उसके दुःख और सुख का हाल मालूम हो; उसके विचारों और इच्छाओं और आर्जुओं और वलवलों की झलक नज़र आएँ; उसकी शक्ति मालूम हो और उसकी कमज़ोरी, उसकी बहादुरी और ड़रपोक पन दिखे। गिरे हुए देश का साहित्य गिरा हुआ होगा। बंधे हुए देश का साहित्य बंधा हुआ होता है। इसलिए जो लोग साहित्य से प्रेम करते हैं और उसकी उन्नति चाहते हैं, उनको चाहिए कि देश को आज़ाद करें और हमारी जनता की दरिद्रता दूर करें।

जवाहर लाल नेहरू

फाल्गुन बदी ४, १९९३.

वर्धा

१ मार्च १९३७.

ब्राह्मण-धर्म

ह. पृ. १०

प्राचीन काल से भारत वर्ष में वैदिक-धर्म प्रचलित था। ईश्वर की उपासना, यज्ञ करना तथा वर्णव्यवस्था आदि इसके मुख्य अंग थे। यज्ञ में पशु-हिंसा भी होती थी। ईश्वर की उपासना उसके भिन्न-भिन्न नामों के अनुसार भिन्न भिन्न रूप में होती थी। प्रायः सारे भारतवर्ष में वैदिक धर्म का प्रचार था। बौद्ध धर्म की उन्नति के समय में उसे राज्य की सहायता मिलने के कारण ब्राह्मण धर्म का प्रचार शैनः शैनः कम होता गया और जैन धर्म ने भी इसे कुछ हानि पहुँचाई। बौद्ध और जैन धर्मों की उन्नति के समय में वैदिक-धर्म क्षीण तो हुआ परन्तु नष्ट नहीं हुआ। ज्यों ही बौद्ध धर्म का प्रभाव कम होने लगा, त्योंही वैदिक धर्म ने बहुत वेग से उन्नति

आरंभ की और वह बहुत विकसित तथा पल्लवित होने लगा।

अजमेर,
चैत्र कृष्ण १,
वि. सं. १९९३

गौरीशंकर हीराचंद ओझा

ह. पृ. १२

भारतवर्ष की सांस्कृतिक और साहित्यिक एकता ब्रिटिश राज का परिणाम नहीं है। वह तो रामायण और महाभारत के काल से ही एक और अखंड धार होकर बहती आ रही है। भाषा-भेद ने भारत की एकता में कभी रुकावट नहीं डाली।

कन्हैयालाल मुनशी

ह. पृ. १३

मद्रास के हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में बहुत पढ़ा और सुना था। परन्तु उससे मन में जो एक धारणा बद्धमूल हुई थी,

सम्मेलन के अधिवेशन में आकर मैंने देखा कि वह सीमित है। यहाँ तो हिन्दी प्रचार का कार्य कल्पनातीत है।

मद्रास के हिन्दी प्रचारकों ने राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य में अपने को सबसे अधिक गौरवान्वित किया है। मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।

त्यागरायनगर,
मद्रास. ३-४-१९३७ } सुन्दरलाल त्रिपाठ

ह. पृ. १४

समाज जीवन की वर्तमान समस्या एक बड़े भारी समाज परिवर्तन का नतीजा है। इस समस्या के पीछे अन्तर्राष्ट्रीय अशान्ती के काले बादल हैं। मगर यह भी याद रहे कि इन कठीनाइयों से कोई राष्ट्र या व्यक्ती अपने को बचा नहीं सकता न तो किसी जादू से ये हल हो सकती हैं।

एक व्यापक दृष्टीकोण, सदैव परिवर्तनशील परिस्थिती को समझने की ताकद,

और उसके साथ साथ अपने ऊँचे और अचल आदर्शों के अनुसार सर्व-भूत-हित के ध्येयवाद पर परिश्रम, यह समाजवादी का एकमात्र रास्ता है।

विठ्ठलनगर, }
२१ फ़रवरी ३८ }

अच्युत पटवर्धन

ह. पृ. १५

देश के काम के लिए एक भाषा आवश्यक है। हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी भाषा का प्रचार इसी उद्देश से कर रही है। इसका उद्देश यह कदापि नहीं है कि प्रान्तीय भाषाओं को किसी प्रकार से हानि पहुंचावे। राष्ट्रीय और अन्तरप्रान्तीय काम में इस राष्ट्र-भाषा को ही काम में लाना चाहिए। दक्षिण भारत में जो राष्ट्रभाषा के प्रति उत्साह और श्रद्धा देखी जा रही है उससे आशा होती है कि यह उद्देश्य शीघ्र ही सिद्ध होगा।

१०-३-३८

राजेन्द्रप्रसाद

सजीव साहित्य

ह. पृ. १६

सत्य का तकाज़ा है कि हम जैसे हैं वैसा ही लोगों को देखने दें। लोग हमारी उतनी ही कीमत आँकें जितनी कि वास्तव में हमारी है। हमारे साहित्य में भी यही सत्य प्रतिबिम्बित होना चाहिए।

लोग हमारे प्रत्यक्ष जीवन से जितना पायेंगे उससे कम ही उन्हें हमारी वाणी और लेखनी से मिलेगा। हमारी वाणी और लेखनी में जो कुछ बल है वह हमें सत्य की साधना से ही मिलता है। यदि हम चाहते हों कि हमारा साहित्य सजीव और तेजस्वी हो तो हमें एकमात्र सत्य की ही उपासना करनी होगी। जो सत्य हो उसे साहसपूर्वक अपनाना होगा और जो असत्य हो उसे दृढतापूर्वक छोड़ना, हटाना और मिटाना होगा।

गांधी आश्रम
(हंटूडी अजमेर)

हरिभाऊ उपाध्याय
६—३—३७

ह. पृ. १७

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि,
लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर,
प्रिय लागहु मोहिं राम ॥

महावीर प्र०. द्विवेदी

ह. पृ. १८

कई लोगों का कथन है कि हिन्दी भाषा में राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता नहीं है किन्तु यह उनका कथन भ्रम मूलक है। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है इस विषय में स्व. लोकमान्य तिलक महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने भली भांति सिद्ध कर दिया है—हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस विषय में अनेकों जो प्रयत्न किए हैं और इस कार्य में जो सफलता प्राप्त की है इससे तो पूर्ण आशा है कि हिन्दी सर्वथा राष्ट्रभाषा बनेगी।

च. शु० ५-१९९३ नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

ह. पृ. १९

भारत की स्वतंत्रता के प्रश्न के पश्चात् यदि कोई प्रश्न हमारे लिए महत्वका है तो वह है उपनिवेशों का प्रश्न। भारत की मनुष्य-संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है। अगली जन-संख्या में संभव है हम चालीस करोड़ हो जावें। आठ करोड़ अंग्रेज़ों को न जाने कितने उपनिवेश चाहिए, पर हमें इसकी चिन्ता बहुत कम है। पूर्वीय आफ्रिका हमारे बहुत निकट है। वहाँ की जल-वायु हमारे अनुकूल है। हमारा उस देश से बड़ा पुराना संबंध है। इतने पर भी हम वहाँ अब तक एक लाख से अधिक न हो सके। दक्षिण आफ्रिका में योरपियन नया संसार बसाते हुए भी करीब बीस लाख के पहुंच गये हैं। उनके देश भक्तों और पूंजीपतियों ने वहाँ के लिए

औपनिवेशिक योजनाएँ बनायीं और इतनी बड़ी संख्या में योरपियनों को इतने थोड़े समय में बसा दिया। हमारे लिए भी यह बात नितान्त आवश्यक है कि हम इसी प्रकार की योजनाओं के द्वारा पूर्वीय आफ्रिका को अपना प्रधान उपनिवेश बनावें। पूर्वीय आफ्रीका ही भारत का प्रधान उपनिवेश हो सकता है।

गोविन्ददास
१७-२-३८

अमर दो!

ह. पृ. २१

अेक बात, जो मुझे अेक संताली ने कही थी, पाठकों को सुनाता हूँ। उसने कहा था—

"हमें अेक ही दुःख है, वह दूर कर दिया जाय। जब अकाल पड़ता है, तब खेत में नाज मर जता है,

कुएँ में पानी भर जाता है, घर में मनुष्य और मवेशी मर जाते हैं; पर दो नहीं मरते—खजीना (सरकारी कर) और सूद। बस यही हमारा दुःख है और कुछ नहीं!"

वर्धा
४-२-१९३७

किशोरलाल घ. मशरूवाला

ह. पृ. २२

हरिपुरा

चाहे हिन्दी कहो चाहे हिन्दी हिन्दुस्तानी कहो जिस भाषा को भारतवर्ष के बहुतांश लोग समझ सकते हैं बोल सकते हैं वह ही हिन्दुस्थान की राष्ट्रभाषा होने के लिए पात्र है।

बाल गंगाधर खेर

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

ह. पृ. २३

(१) मेहमान के मेहमान मत बनो। किसी के यहाँ जबरदस्ती मेहमान मत बनो, "मान न मान, मैं

तेरा मेहमान" यह ठीक नहीं। जिसके मेहमान बनो उसके यहाँ भाड़ न ले जाओ और न ज्याद: दिनों तक ठहरो। कोई मित्र यात्रा में मिल जाए तो उसके मेहमान मत बनो।

(२) मंगनी की चीज़ मंगनी मत दो। उसके लौटाने में ढिलाई मत करो। जिस काम के लिए चीज मंगनी मांगो उस काम के हो जाने पर उसको तुरन्त लौटाओ। जिस अवस्था में चीज़ मंगनी लाओ उसी अवस्था में लौटाओ। खराब हो जाए, टूट जाए या खो जाए, तो तुरन्त बिना कहे नई चीज़ ला दो। पेन्सिल आदि छोटी चीज़ें भी मंगनी लो तो ऐसा ही करो। बहुत कीमती चीज़ें कभी मंगनी न लो।

(३) जिधर चलो, उधर देखो। पीछे देखना हो तो रुक जाओ॥

(४) किसी जगह से जाने लगो तो देख लो कि कोई चीज़ रह तो नहीं गयी। उस जगह को साफ़ करके छोड़ना चाहिए।

(५) किसी का नाम पूछना हो तो पूछो, "आपका शुभ नाम क्या है?"

काशी
१७-३-१९३७

रामनारायण मिश्र

ह, पृ. २६

भाषा की उपयोगिता इसमें है कि वह कितनी सफ़ाई से लिखनेवाले के भाव को प्रकट करती है। मगर भाषा उसके भावों को साफ़ साफ़ बतलाने की जगह उनपर एक प्रकार का परदा डाल देती है तो यह भाषा का दुरुपयोग है। मगर खेद है कि हम सब रात दिन यही किया करते हैं। इसीलिए एक विद्वान ने कहा है कि भाषा का व्यवहार हम अपने विचार ज़ाहिर करने के लिये नहीं, उन्हें छिपाने के लिए करते हैं।

प्रेमचंद

ह. पृ. २६

इस स्वप्न मयी संसृति के
सच्चे, जीवन तुम जागो ।
मङ्गल किरणों से रञ्जित
मेरे सुन्दर तम जागो ।

जयशंकर प्रसाद

ह. पृ. २७

काव्य या साहित्य को हम महाजनों की भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं का एक लिखित भांडार कह सकते हैं, जो अनंत काल से भरता आता है, और निरंतर भरता जायगा । मानव सृष्टि के आरंभ से मनुष्य जो देखता, अनुभव करता और सोचता विचारता आया है, उस सब का बहुत कुछ अंश इसमें भरा पड़ा है ।

काशी }
३-३-३७ }

श्यामसुन्दरदास

पुष्प की अभिलाषा

ह. पृ. २८

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी की माला बिंध
प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि! डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के शिर पर चढ़ूँ
भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना वन-माली, उस पथ में देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक ॥

—एक भारतीय आत्मा

मान. पं. द्वारकाप्रसादजी मिश्र का निवास
हरिपुरा : १७ फ़रवरी १९३८.

ह. पृ. २९

इस जग में जीवित हूँ मैं, कण-कण के परिवर्तन से ।
तुमने मुझको बांधा है, इन सांसों के बन्धन से ॥

श्री रामकुमार वर्मा
१२-१०'३६.

ह. पृ. २९

शंका होने पर दूसरों से न पूँछ कर स्वयं अपने से पूँछिए। यह आत्म निर्भरता सिखलावेगा।

प्रयाग, धीरेन्द्र वर्मा

आश्विन १९९३ वि०।

ह. पृ. २९.

धर्म की रसात्मक अनुभूति भक्ति है।

रामचन्द्र शुक्ल
९-१०-३६.

ह. पृ. ३०

जीवित भाषा का अेकमात्र लक्षण यह है कि वह लचीली होती है और समय की आवश्यकताओं के अनुसार सुविधाअें उपस्थित करती है। अन्य भाषा भाषियों को हिन्दी सीखने में सब से बड़ी कठिनाओी लिंग के कारण होती है। यदि हम इस कठिनाओी को दूर कर सकें तो हिन्दी के और भारतीय संस्कृति के क्षेत्र विस्तार में सहायक होंगे।

मद्रास पुरुषोत्तमदास टंडन
२७-३-३७

(स्पीकर—यू. पी. असेम्बली)

ह. पृ. २१

प्रेम का सच्चा सुख त्याग में है। जहाँ स्वार्थ है, वहाँ प्रेम कहाँ? जिसे प्यार करो, उसे देखने से बिना किसी स्वार्थ के हृदय में आनंद की लहरें उठने लगे, उसके स्मरण से चित्त आनंदमय हो जाय, तब जानो प्रेम सच्चा है।

सच्चे प्रेम में सदा-सर्वदा नवीनता रहती है। चन्द्रमा को हम कितनी बार देखते हैं, पर क्या वह कभी बासी होता है? इसी तरह प्रेम भी नित्य नूतन उच्च, व्यापक और सदा आनन्दमय है।

प्रेम परमात्मा के निजी कोष की सम्पदा है। सच तो यह है कि प्रेम परमात्मा

का प्रतिबिम्ब ही है। जो प्रेम परमात्मा की ओर आत्मा को न ले जाय, वह प्रेम नहीं, काम है, मोह है और वासना है।

कुछ लोग कहते हैं, प्रेम अंधा होता है; यह गलत है। वह मोह है, जो शरीर का शरीर से होता है। प्रेम आत्मा का विषय है।

जिसके जीवन में जितना ही अधिक प्रेम है, उतना ही अधिक संसार में उसका जय-जयकार है।

प्रेम के प्रकाश से भीतर और बाहर जगमगा उठो। प्रत्येक क्षण प्रेम के समुद्र में डूबे रहो थोड़े ही समय में सुन्दर बन जाओगे।

प्रयाग
९—३—३७

रामनरेश त्रिपाठी

ह. पृ. ३४

मेरी चाहना तो यह है के भारत की
ऐसी भाषा हो जो हर अेक भारत
निवासी—हिन्दु, मुसलिम, ईसाई,
पारसी आसानी मे समझ सके।

कैलासनाथ काटजू

हरिपुरा
(मंत्री, यू. पी. सरकार)

ह. पृ. ३४

अुदारता, पवित्रता और
अुद्योग के द्वारा ही हम
अपना अुद्धार कर सकेंगे।
यही आज का युगधर्म है।

काका कालेलकर

२७-३-३७

"प्रधान मंत्री-वर्णन"

ह. पृ. ३५

(बरवै छंद)

सिर सफेद कछु केसवा,
बाँड़ा कोट।
झाँकति रहति कमिजिया,
कोटवा ओट॥

झूमति रहति सुथनिया,
चप्पल चूमि ।
अकड़ि चलत परधनवा,
छुवत न भूमि ॥

—द्वारकाप्रसादमिश्र
कैम्प हरिपुरा, १७-२-३८
(मंत्री—सी. पी. सरकार)

ह. पृ. ३६

हम संक्रान्ति काल के प्राणी
बदा नहीं सुख भोग;
हमें क्या पता क्या होता है
स्निग्ध मधुर संयोग
हम विछोह के पले, खूब जाने
हम पूर्ण वियोग
घर उजाड़ कर जेल बसाने—
का है हमको रोग

बालकृष्ण शर्मा
२५-४-३६

ह. पृ. ३६

मैं दक्षिण भारत हिन्दी सभा
सम्मेलन को मुबारकबाद देता हूँ

और खुदा से दुआ करता हूँ कि वह इसकी कोशिशों में मदद करे और इस नेक काम में तरक्की दे ताके मुल्क याने हिन्दुस्तान की पूरी खिदमत हो सके।

नागपूर,
१७-२-३८

मैं हूँ आपका सेवक
मु. यूसुफ़ शरीफ़

ह. पृ. ३७

हम हिन्दी प्रचारकों की कार्य-शक्ति अत्यंत सीमित है अिसी कारण से हम हिन्दी के साहित्य की ओर कम तथा राष्ट्रभाषा प्रचार की तरफ़ अधिक ध्यान देते हैं। अपने भावों को अच्छे असरकारी शब्दों में प्रकट करने की शक्ति हर अेक हिन्दुस्थानवासी में आ जाय यही हमारा मन्तव्य है।

परतंत्रता के जाल को

तोड़ने के कार्य में असमें
हम पूरा सहयोग दे सकते हैं।

ग. र. वैशंपायन
सं. हिंदी मराठी-व्यवहार कोष

ह. पृ. ३८

आज हम उदासीन नहीं रह सकते। हममें से हर एक के सामने यह प्रश्न है कि वह इन शक्तियों में से किसका साथ देगा। हम एक क्रान्तिकारी युग में रह रहे हैं। आज संसार में वर्ग २ तबदीलियाँ हो रही हैं। हम इनकी उपेक्षा नहीं कर सकते। इन नवीन समस्याओं के संबन्ध में, अच्छी या बुरी, कुछ न कुछ राय हमको क़ायम करनी होगी। हमारे निर्णय पर संसार का भविष्य निर्भर करता है।

नरेन्द्रदेव

ह. पृ. ३९

हर एक व्यक्ति को यह
समझना चाहिये कि समाज
की भलाई के बिना उसकी

भलाई नहीं हो सकती। समष्टि की भलाई ही सच्ची आध्यात्मिकता है। व्यक्तिगत उन्नति में स्वार्थ की कामना नहीं होना चाहिये। समष्टि के अभ्युदय के बिना व्यक्तिगत उन्नति व्यर्थ है। हर एक समाज को भी इस सचाई का अनुभव करना चाहिये।

शंकर दत्तात्रय देव

ह. पृ. ४०

हिन्दी प्रचार में तो मेरा बड़ा विश्वास है। जब तक हिन्दुस्तान में कोई ऐसी भाषा न होवे जो अंग्रेजी के बदले सारे देश में बोली जाय तब तक भारतवर्ष में एकता कभी न होगी।

लीलावती मुनशी

हिन्दी प्रचार

ह. पृ. ४१

एक भाषा, यह एक राष्ट्रीयता का एक प्रधान लक्षण है ऐसा मैं मानता हूँ। मद्रास प्रान्त की सब प्रान्तीय भाषाएँ संस्कृत जन्य नहीं हैं। अतएव वहाँ हिन्दी प्रचार की ज़्यादह ज़रूरत है। वहाँ हिन्दी का प्रचार बहुत अच्छी तरह और ज़ोर शोर के साथ हो रहा है। यह बड़ी खुशी की बात है।

हरिपुरा
१७-२-३७

ना. भा. खरे.

ह. पृ ४२

दक्षिण भारत में आज जो राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रचार हो रहा है उसके मूल में मैं शुद्ध

राष्ट्र-सेवा देखता हूँ । आत्म-शुद्धि के लिए इसमें काफी अवकाश होना चाहिए और है । इस उद्देश की पूर्ति ऐसे ही सेवक कर सकते हैं । अतः इस वस्तु को संकीर्ण न बनाकर व्यापक बनाने की इच्छा हमारे अंतर में होनी चाहिए ।

वियोगी हरि
२१-२-३८

भाषा शुद्धी

ह. पृ. ४३

प्रत्येक भाषा का अपना एक ढंग होता है । यदि उसमें विच्छेद होवे तो वह बिगड़ जाती है । इसमें और उसके विकास में बहुत फरक है । इस बात पर तो जिन लोगों कि वह मातृभाषा नहीं

उन्होंने तो अधिक ध्यान देना अवश्य है। यह सत्य है कि भाषा कि बढ़ति उस की शब्द संपत्ती बढ़ने से होती है। लोकमान्य तिलक महाराज ने संसार का प्राचीनतम ग्रंथ ऐसा जो ऋग्वेद उसमें भी अन्य भाषाओं के शब्द हैं वह दिखाया है।

सरस्वती निकेतन
इंदौर
ता० १२-३-३७

मा. वि. किबे

ह. पृ. ४५

१. दया धर्मका मूल है।
२. जन्मभूमि जननी समान पूज्य है।
३. त्याग, विवेक और साहस ये साधनत्रयी पारमार्थिक और सांसारिक मोक्ष संपादन की सोपान परंपरा है।

४. पारतंत्र से और कोई लज्जास्पद
स्थिति नहिं तथा स्वातंत्र्य मे
अधिक अभिमानास्पद कोई
अवस्था नहिं हो सकती ।

माधव श्रीहरि अणे

ह. पृ. ४६

हमारे देश में नाना भाषाओं के होते हुये भी हमें एक राष्ट्रभाषा की ज़रूरत तो है ही और इस राष्ट्रभाषा के लिये सब से अच्छी भाषा हिन्दी ही हो सकती है जिसको पू० महात्मा जी हिन्दुस्तानी भाषा कहते हैं।

हिन्दी का प्रचार करना राष्ट्र की महान सेवा है। हमारी स्वाधीनता के लिए उसका प्रचार आवश्यक है। इसके सिवा आज तो यह हमारे हर कामों में उपयोगी भी होती जा रही है और इसकी उपयोगिता दिन दिन बढ़ती ही रहेगी।

सीतराम सेकसरिया
२०-२-३८.
हरिपुरा कांग्रेस

ह. पृ. ४७

संसार के सब मनुष्य स्वार्थान्ध हो रहे हैं। स्वदेश भक्त स्वदेश के स्वार्थ से—स्वसमाजभक्त स्वसमाज के स्वार्थ से—स्वधर्मभक्त स्वधर्म के स्वार्थ से—स्वकुटुम्बानुरक्त स्वकुटुम्ब के स्वार्थ से—स्वानुरक्त स्वकीय स्वार्थ से—अन्ध होकर अपने संकुचित क्षेत्र से बाहर जाती हुई अपनी दृष्टि को बलपूर्वक रोकते हैं। यह स्वार्थधारा इस शताब्दी में ऐसे वेग से चलने लगी है कि 'महाप्रलय' नहीं तो 'खण्ड प्रलय' तो अवश्य ही आता हुआ भासित होता है।

'सर्वः सर्वत्र नन्दतु'

गंगानाथ झा
१७—७—३७
प्रयाग

बनारस
९-१०-३९

दोहा

ह. पृ. ४८

ललकि-ललकि लोयनन तेहि,
लखि-लखि होहु निहाल ।
लाली इत उत को लहत,
लहे जीव जेहि लाल ।

अयोध्यासिंह उपाध्याय
'हरिऔध'

ह. पृ. ४९

सर्व सुखसाधन का एकमात्र उपाय ।

ॐ

आत्मज्ञान के बिना धर्म तत्त्व का ज्ञान नहीं । धर्मतत्त्व ज्ञान के बिना समाज की उत्तम व्यवस्था नहीं । सच्ची वर्णव्यवस्था और सच्ची आश्रमव्यवस्था के बिना वैयक्तिक और सामूहिक सुख नहीं ।

"नह्यनध्यात्मवित् कश्चित्क्रियाफलमुपाश्नुते ।"
(मनु०)

बुद्धं, सद्‌बुद्धिमंतं, आत्मबोधवन्तं, शरणं गच्छामि। धर्मं सद्‌बुद्धिनिर्णीतं, सर्व-धारकं, सद्धर्मं शरणं गच्छामि। संघं, सद्धर्मानुसारिणं, सुसंहतं, सुसंग्रथितं, सुसंघटितं, मानवसंघातं, सुव्यवस्थितं समाजं, शरणं गच्छामि।

नई दिल्ली,
शिवरात्री,
भगवानदास

सौर २७ फाल्गुण (कुंभ), १९९३ वि०=११ मार्च १९३७ ई०

ह. पृ. ५०

नई दिल्ली
४ चैत १९९३

प्रिय महाशय, सप्रेम वन्दे।

मुझे खेद है मैं काम की भीड़ में आपके पत्र का उत्तर देना और आपकी आज्ञा सम्पन्न करना भूल गाया था।

मुझे आपका पत्र अभी मिला, मैं तुरन्त उत्तर लिख रहा हूँ—लाल रोशनाई के अभाव में काली रोशनाई का ही प्रयोग कर रहा हूँ क्षमा कीजियेगा।

मैं और क्या लिखूँ कुछ समझ में

नहीं आता—मैं लिपि के सम्बन्ध में कोई कामप्रमाइज़ नहीं कर सकता। न तो मुझे पूज्य बापू जी की राय से ही मतैक्य है जब वे कहते हैं कि अपने देश में हिन्दी नागरी अक्षरों में और अरबी अक्षरों में दोनों में लिखी जावें व न मैं काका कालेलकर जी की लिपि सुधार व्यवस्था से सहमत हूँ। मैं काका साहब की सेवा में अपने विचार पहिले लिख चुका हूँ। जिन अक्षरों में आज उर्दू लिखी जाती है वह वास्तव में अरबी अक्षर हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि जब चीन के मुसलमान सज्जन कुछ अरबी अक्षरों में चीनी भाषा लिखने का आग्रह नहीं करते और संसार के अन्य भिन्न-भिन्न देशों के बसनेवाले मुसलमान सज्जन वहाँ की ही लिपि का प्रयोग करते हैं तो अभागे भारतवर्ष के मुसलमान सज्जन ही क्यों इस बात पर आग्रह करते हैं कि यहाँ की एक ही भाषा दो भिन्न-भिन्न लिपियों में लिखी जावें। मैं

हिन्दी व उर्दू को एक ही भाषा समझता हूँ और ये वास्तव में एक ही भाषा हैं भी। केवल एक में फ़ारसी, अरबी शब्दों का और दूसरी में संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है. जो आजकल जान बूझ कर बढ़ाया जा रहा है। अन्यथा दोनों का व्याकरण एक ही है और दोनों के अधिकांश शब्द, मेरा ख्याल है कि ५० प्रतिशत से अधिक, एक ही हैं। हिन्दी ही क्यों बंगाल व गुजरात का भी यही हाल है, बंगला में भी मुसलमान सज्जनों की भाषा में अरबी फारसी के अनेक शब्द आते हैं, जैसे नज़रुल-इस्लाम साहेब की पद्यरचनायें; वैसे ही फारसी भाइयों की गुजराती में भी फारसी के शब्दों का बाहुल्य पाया जाता है, पर ये दोनों भाषाएँ बंगाक्षरों में और गुजराती अक्षरों में लिखी जाती हैं। बंगला को अरबी अक्षरों में लिखनेका कोई ध्यान नहीं करता। संयुक्त प्रान्त के मुसलमान भाइयों के यहाँ आजकल भी बही-खाता व घरेलू कामकाज में हिन्दी ही बरती जाती है अस्तु॥

अपकी आज्ञा के विपरीतमैं ४ पृष्ठ लिख गया, क्षमा कीजियेगा जो आपको बेकार हो उसे फेंक दीजिएगा ।

खेद है यहाँ मेरी कोई तस्वीर नहीं है और यदि होती भी तो मैं न भेजता । फिर क्षमा मांगता हुआ ।

विनीत

शिवप्रसादगुप्त



कुछ सुन्दर लिखावट

दक्षिण भारत के लोग हिन्दी पढ़ने में जितना उत्साह दिखाते हैं उतना उत्साह लिखने में नहीं दिखाते। क्या ही अच्छा होता अगर वे शुरू से ही लिखने का भी अच्छा अभ्यास करते। इससे उनकी लिखावट बहुत सुन्दर बनेगी और हिन्दी परीक्षाओं में भी वे आसानी से पास हो जायेंगे। अक्सर ऐसा होता है कि परीक्षक खराब अक्षरों से बहुत जल्दी ऊब जाता है और वह चाहता है कि किसी तरह से उत्तर-पुस्तक को खतम कर डाले। लेकिन हर्फ़ सुन्दर होने से वह खुश होता है और उसका फल परीक्षार्थी को मिलता है।

पूज्य हो।

मैं बड़ा भाग्यशाली हूं; क्योंकि दुनियाने मेरी योग्यताओंसे ज्यादा मेरा आदर-सत्कार किया;

जिसीके संपर्कमें आया, उसीने मेरी भलाई की — मेरी अयोग्यता पर गौर न करके मेरे साथ उदारताका बर्ताव किया;

किसीकी भलाई मैंने की — ऐसा ख्याल नहीं आता है, पर बुराई बहुत देख पड़ी है; क्षमा चाहता हूं — तहेदिलसे!

अपने अंदर न झांकनेके कारण मैं कुढ़ता था, चिढ़ता था, व्यथित होता था; अब कहता हूं — मैं भाग्यशाली हूं और तुम सभी मेरे पूज्य हो।

श्रीरामानंद शर्मा

"यह कहना एक फ़ैशन-सा बन गया है कि अहिंसात्मक रूप में समाज का संगठन नहीं हो सकता। मेरा इस बारे में मत-भेद है। कुटुम्ब में जब पिता अपने कोमल बच्चे को थप्पड़ मारता है, तो बच्चा बदला लेने का कोई विचार नहीं करता। और पिता का कहना वह उस मार के कारण नहीं, लेकिन उस मार के पीछे पिता के जी को चोट पहुंचती है, उसके कारण मानता है। मेरी राय में यही वह तरीक़ा है जिससे समाज चलता है या चलना चाहिये। जो बात कुटुम्ब के लिये ठीक है

वही समाज के लिये भी ठीक होनी चाहिये, क्योंकि वह भी तो आखिर एक बड़ा कुटुम्ब ही है। यह तो मनुष्य की कल्पना है जिसने मनुष्य को मित्रों और शत्रुओं के भिन्न-भिन्न समूहों में विभक्त कर रखा है। लड़ाई झगड़े के बीच भी अन्त में जा कर तो प्रेम की शक्ति से ही काम निकलता है और उसी से दुनिया कायम रहती है।"

"गान्धीजी."